उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की तर्क योग्यता का उनके समय नियोजन क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती रूपा श्रीवास्तव, षोधार्थी, सहायक प्राध्यापक, सेंट थॉमस कालेज,

भिलाई (छ.ग.)

डॉ. सोनिया पोपली, षोध निर्देषक, सहायक प्राध्यापक, सेंट थॉमस कालेज,

भिलाई (छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ के सरकारी विद्यालय के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के तर्क योग्यता का उनके समय नियोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। इस अध्ययन हेतु दुर्ग जिले कि 600 विद्यार्थियों को विधि द्वारा लिया गया है।विद्यार्थियों के तर्क योग्यता के मापन हेतु श्री के बायनी द्वारा निर्मित मापनी तर्क योग्यता मापनी का उपयोग किया गया तथा समय नियोजन के मापन हेतु श्री डी. एन. सनसनवाल द्वारा निर्मित समय नियोजन मापनी का उपयोग किया गया। सांख्यिकी विष्लेषण हेतु प्रकरण विष्लेषण की गणना की गयी। अध्ययन का निष्कर्ष यह बताते है कि विद्यार्थियों के तर्क योग्यता का उनके समय नियोजन पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

प्रस्तावना

षिक्षा ज्ञान का एक विषाल सागर है जिसके अध्ययन से मनुष्य की सम्पूर्ण शक्तियों का विकास संभव है। पाषविक शक्तियां का दमन कर उसे कल्याणकारी मार्ग की ओर से जाया जाता है और अपने जीवन में सत्यं षिवम सुन्दरम् की स्थापना किया जाता है। मनुष्या षिक्षा के माध्यम से अपने जीवन के लक्ष्य को शीघ्रता से प्राप्त करता है।

तर्क चिंतन का उत्कृष्ट रूप और जटिल, मानसिक प्रक्रिया है इसे साधारतः औपचारिक नियमों से संबंध्द किया जाता है, तार्किक चिंतन के द्वारा व्यक्ति अपने उद्देष्यों को प्राप्त करता है। षिक्षा के क्षेत्र में तर्क का महत्वपूर्ण, स्थान दिया जाता है। यही कारण है कि अध्यापक से अपेक्षा की जाती है। की बालको की तर्क शक्ति का विकास करे, विचार विमर्ष, वाद विवाद खोज अनुसंधान आदि तार्किक चिंतन को प्रोत्साहित करते हैं ।

तर्क योग्यता एक ऐसा चर है जिससे विद्यार्थी किसी समस्या का हल खोजने में उपयोग करता है। तर्क योग्यता तथा समस्या हल करने में संबंध जोड़ा जा सकता है। इससे यह जानकारी मिल सकती है कि विद्यार्थी किस

सीमा तक समस्या हल कर सकता है इससे विद्यार्थियों को कार्य कारण के मध्य संबंध जोड़ने के योग्य बनाया जा सकता है उच्च तार्किक योग्यता उच्च सफलता का घोतक है।

समायोजन का प्रबंधन प्रकृति से स्पष्ट समझा जा सकता है। समय का काल चक्र प्रकृति में नियमित है समय नियोजन का विद्यार्थियों के जीवन में महत्वपूर्ण है। समय नियोजन के नही होने से विद्यार्थियों में अनुषासन की कमी आयेगी और इसके कारण उसके जीवन की सफलता भी उतनी नही होगी जितनी की मिलनी चाहिए। अतः समय नियोजन विद्यार्थी जीवन में बहुत बड़ा स्थान रखता है तथा विद्यार्थी जीवन में समय नियोजन की मुख्य भूमिका का निर्वाह करती है। यदि विद्यार्थी जीवन में समय का सही उपयोग किया जाए तो जीवन में सफलता अवष्य मिलेगी ।

उद्देष्य

1. शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की तर्क योग्यता का उनकी समय नियोजन क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

विद्यार्थियों की तर्क योग्यता का समय नियोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाये जाएगा।

अध्ययन की परिसीमा

1. अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले, का चयन किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में शासकीय शालाओं को ही सम्मिलित किया गया है।
3. अध्ययन हेतु शासकीय विद्यालयों के उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
4. अध्ययन हेतु शासकीय विद्यालयों के दुर्ग जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र का चुनाव किया गया है।

चर – स्वतंत्र चर – तर्क योग्यता

आश्रित चर – समय नियोजन

शोध विधि

षोध समस्या की प्रकृति को देखते हुए शोधकर्ता द्वारा यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया है ।

न्यादर्ष

न्यायदर्ष हेतु दुर्ग जिले के (ग्रामीण एवं शहरी) क्षेत्र शासकीय विद्यालय के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 600 विद्यार्थियों का चुनाव स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

तलिका क्रमांक – 1 न्यायदर्ष का विवरण

कक्षा	ष्षहरी			ग्रामीण			कुल योग
	छात्र	छात्रा	योग	छात्र	छात्रा	योग	
नवमी	150	150	300	150	150	300	600

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु विद्यार्थियों की तर्क योग्यता के मापनी हेतु श्री के. बायती द्वारा निर्मित तर्क योग्यता मापनी का उपयोग किया गया तथा विद्यार्थियों के समय नियोजन का प्रभाव देखने हेतु श्री डी. एन. सनसनवाल द्वारा निर्मित समय नियोजन मापनी का उपयोग किया गया।

प्रदत्तों का एकत्रीकरण :

सरकारी विद्यालयों के कक्षा नवमी में अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के 300 विद्यार्थियों एवं शहरी क्षेत्र के 200 विद्यार्थियों से तर्क योग्यता मापनी एवं समय नियोजन मापनी प्रपत्र को भरवाया गया ।

सांख्यिकीय अभिप्रयोग :

प्रस्तुत शोध में दो चरों के मध्य प्राप्त होने वाले अंतर का आंकलन एवं चरिता विष्लेषण ;वदम ूल ।छव्ट।द्ध के रूप में किया गया है ।

प्रदत्तों का विष्लेषण :

तर्क योग्यता का कक्षा नवमी में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समय नियोजन पर प्रभाव का अध्ययनरत करना था । इस उद्देष्य से संबंधित संकलित प्रदत्तों के विष्लेषण के लिये एक चरिता विष्लेषण के परिणाम तालिका क्रमांक 2 में दिये गये हैं ।

तलिका क्रमांक – विद्यार्थियों की तर्क योग्यता का समय नियोजन पर प्रभाव

ज्ंइसम छवण रू 2ैनउउंतल वि विदम ूंल ।छव्ट।

ैवनतबम वि अंतपंदबम	ैनउ वि्ुनंतमे	कि	डमंद ेनउ वि ्ुनंतमे	थ्	ैपह
ठमजूममद ळतवनचे	693ण926	1	693ण926	ण979	ण323
ॅपजीपद ळतवनचे	423975ण472	599	708ण989		
ज्वजंस	424669ण398	600			

तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट होता है कि तर्क योग्यता के लिए 0ण979 प्राप्त हुई जो ये दर्षाता है कि विद्यार्थियों की समय नियोजन क्षमता पर उनकी तर्क योग्यता का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता । अतः यह शून्य परिकल्पना कि 'विद्यार्थियों की तर्क योग्यता का उनके समय नियोजन क्षमता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा' को अस्वीकृत नहीं किया जा सकता है ।

इस विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की तर्क योग्यता का उनके समय नियोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया ।

निष्कर्ष :

विद्यार्थियों की तर्क योग्यता का उनके समय नियोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया ।

विवचेना :

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उच्च तर्क योग्यता वाले विद्यार्थियों एवं निम्न तर्क योग्यता वाले विद्यार्थियों की समय नियोजन क्षमता समान स्तर की होती है ।

संदर्भ सूची :–

1. **त्रिपाठी, मधुसुदन (2009) – ''षिक्षा अनुसंधान एवं सांख्यिकी'', नई दिल्लीः ओमेगा प्रकाषन पृ. 9**
2. **वषिश्ठ, विजेन्द्र (2007)– ''षिक्षा मनोविज्ञान'' दिल्लीः अर्जुन पब्लिषिंग हाऊस**
3. **सिन्हा एवं मिश्रा (2007) – ''षैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, आगराः विनोद पुस्तक मंदिर**
4. **षर्मा, आर.ए.(2007) – षिक्षा अनुसंधान**
5. **माथुर, एस.एस.(2007) – षिक्षा मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2**
6. **सक्सेना, स्वरूप;(2006) – षिक्षा के दार्षनिक एवं सामाजषास्त्रीय सिद्धांत, मेरठ सूर्य पब्लिकेषस निकट गर्वमेंट कॉलेज पृश्ठ (12–14)**

7. सरीन व सरीन;(2003) – षैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, आगराः विनोद पुस्तक मंदिर।

8. सिंह लाभ, प्रसाद, द्वारका एवं भार्गव, महेष(2003) – ''सांख्यिकी के मूल आधार'' आगराः एच.पी. भार्गव बुक हाउस पृश्ठ (10–15)।

9. गुप्ता मधु (2000) – षिक्षा संस्कार एवं उपलब्धि क्लासिकल, पब्लिषिंग कम्पनी नई दिल्ली, प्रथम संस्करण।

10. त्रिपाठी लाल बचन एवं मिश्रा, गिरीष्वर;(1999) – आधुनिक प्रायोगिक मनोविज्ञान आगराः एच.पी.भार्गव बुक हाउस पृ. (3–203)

11. वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी.एन.(2007) – आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक भंडार।

12. गैरेट, हेनरी ई. (1987) – षिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकीय, लुधियाना कल्याणी पब्लिषर्स।

13. पाठक, पी.डी. एवं जी.एस.डी (1985) षिक्षा मनोविज्ञान, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

14. पाठक पी.डी. – षिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ लायन बुक डिपो।